1965 के युद्द में वायु सैन्य संक्रियाएँ -: इस युद्ध के समय भारतीय वायु सेना मे 900 वायुयान थे जिसमें मुख्यत: मिग21 विमान तथा 550 लडाकू विमान शामिल थे। जबकि पाक सैना की वायुयानों की कुल संख्या 800 थी। जिसमें मुख्यत: सैबर जेट एवं स्टार फाइटर थे। पाकिस्तान के सैबर जेट एवं स्टार फाइटर भारतीय विमानों से अधिक उन्नत तथा अच्छे किस्म के थे। किन्तु ये 35 से 40 हजार फीट की ऊँचाई पर ही अच्छी तरह से कार्य कर सकते थे जबकि स्थल सेना की सहायता के लिए 1000 फीट की ऊचाई पर उड़ना चाहिए था। इसी कारण से ये विमान युद्ध मे असफल सिद्ध हुए।

1965 के युद्द में भारतीय सेना ने एयर मार्शल अर्जुन सिंह के नेतृत्व में भारतीय स्थल सेना को भरपूर सहयोग देनें के साथ-2 पाकिस्तानी वायु सेना को निष्क्रिय बनानें का महत्वपूर्ण कार्य किया। जिस समय पाकिस्तानी टैंक छम्ब क्षेत्र में घुसनें का प्रयास कर रहे थे। भारतीय सेना ने 28 उडानें भरकर इस आक्रमण को विफल कर दिया इसके अलावा 48 घंटे में भारतीय वायु सेना ने आकाश मे अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। तथा पाक वायु सेना को आकाश में उडने से लगभग रोक दिया। पाकिस्तान के चकलाला एवं सरगोधा हवाई अड्डे पर

भीषण बमबारी करके पाकिस्तान के 20 वायुयानों को नष्ट कर दिया तथा अनेक रडार केन्द्र को भी नष्ट कर दिया ~~तथा अनेक रडार केन्द्रों को भी नष्ट कर दिया~~ हमारी विमान भेदी तोपों ने तीन पाकिस्तानी जेट विमानों को मार गिराया। हमारी सेना ने पाक के अन्दर तक घुसकर मार करके शत्रु सेना को आश्चर्य चकित कर दिया। इस युद्ध में पाक के 77 वायुयान नष्ट हुए। जबकि भारत के 35 वायुयान नष्ट हुए।

ताशकन्द समझौता एवं युद्धविराम -: संयुक्त राष्ट्र संघ के सहयोग से 23 सितम्बर 1965 को युद्ध विराम हुआ। पाकिस्तान के 462 टैंक नष्ट हुए जबकि भारत के 123 टैंक नष्ट हुए। इस युद्ध में भारत ने 690 वर्गमील क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था। जबकि पाक ने भारत के 250 वर्गमील पर ही अधिकार किया था। इस युद्ध का अन्त ताशकन्द समझौते के द्वारा हुआ इस समझौते मे भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री तथा पाक राष्ट्रपति जनरल अयूब ने 10 जनवरी 1966 को हस्ताक्षर किये। इस समझौते में यह निश्चित किया गया कि भारत एवं पाक दोनों अपने जीते हुए क्षेत्र एक दूसरे को वापस कर देंगें। इस समझौते से शास्त्री जी को आघात पहुँचा। और उनकी हृदयगति रुक जाने से ताशकन्द में ही उनकी मृत्यु हो गयी।

युद्ध से प्राप्त राजनीतिक एवं सैनिक शिक्षाएं -: यह युद्ध निर्णायक युद्ध न होते हुए भी इससे अनेक राजनीतिक एवं सैनिक शिक्षाएं प्राप्त होती हैं —

1. 1965 के युद्ध में भारत की विजय हुई इस विजय से 1962 के चीन युद्ध के पराजय का कलंक धुल गया, और भारत पुनः एशिया और अफ्रिका के नये देशों का नेता बन गया।
2. विजय सिर्फ श्रेष्ठ हथियारों से नही प्राप्त होती है, ~~क्योंकि~~ बल्कि प्रशिक्षण से प्राप्त होती है। अमेरिका द्वारा दिये गये पैट्रन टैंकों एवं लडाकू वायुयान इस युद्ध में बेकार साबित हुए। क्योंकि पाक सेना उनको सही ढंग से चलाना नही जानती थी। युद्ध में विजय आत्मनिर्भरता से प्राप्त होती है, न की दूसरे के सहयोग से। पाक ने चीन एवं अमेरिका के भरोसे भारत पर आक्रमण कर दिया, जिससे उसे पराजय का मुँह देखना पडा।
3. भारत को पाक के किसी भी समझौते पर विश्वास करके युद्ध की तैयारी बन्द नही करनी चाहिए। पाक भारत की जब कमजोर स्थिति मे देखेगा, तो आक्रमण कर सकता है।
4. किसी भी युद्ध मे विजय प्राप्त करने के लिए स्थल, जल एवं वायु तीनों सेनाओं का सहयोग आवश्यक है। 1965 के युद्ध में जब पाक टैंकों ने छम्बक्षेत्र पर आक्रमण किया तो भारतीय वायु सेना ने एक दिन मे 28 उड़ानें भरकर पाक के 66 टैंकों को नष्ट करने मे भरपूर सहयोग किया।

5: भारत ने इस युद्ध में युद्ध के केन्द्रीय करण के सिद्धान्त (सकेन्द्रण) का पालन करते हुए लाहौर एवं स्यालकोट में भारी मात्रा में सेना से आक्रमण करके शत्रु की इच्छोगिल नहर को तोड़कर पाक को आश्चर्य चकित कर दिया।

6: युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए वायु सेना बहुत महत्व पूर्ण होती है भारतीय वायुसेना ने इस युद्ध में आकाश में अपना पूराधिभुत्व स्थापित कर लिया, पाक वायुसेना को आकाश में रोक दिया, जिससें भारत को विजय मिली।

7: इस युद्ध ने स्पष्ट कर दिया की कार्यवाही की सफलता के लिए स्थानीय जनता का सहयोग अत्यन्त आवश्यक होता है। पंजाब एवं कश्मीर की जनता ने भारतीय सैनिकों का भरपूर सहयोग करके उनका मनोबल ऊचा रखा। जिससे भारत को सफलता प्राप्त हुई।